Version : 3

देव-दर्शन

Presentation created by :
Smt. Sarika Vikas Chhabra

देव-दर्शन किसे कहते हैं?

देव + दर्शन

- देव = जिनेन्द्र भगवान
- दर्शन = देखना / निहारना / निरखना

जिन मन्दिर= जिनेन्द्र भगवान जहां विराजते है

Note : ये देव गति के देव से भिन्न है ।

दर्शन विधि

- घर से पाठ या स्तुति बोलते हुये प्रसन्न मन से मन्दिरजी जाये ।
- मन्दिरजी के बाहर side में जूते- चप्पल – मौजे (socks) उतारें ।
- स्वच्छ छने हुए जल से हाथ पैर धोये ।
- मन्दिरजी में घण्टा बजायें।
- नि:सहि नि:सहि नि:सहि बोलते हुए मन्दिरजी में प्रवेश करें ।
- भगवान की प्रतिमा के सामने ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु कहें ।

दर्शन विधि

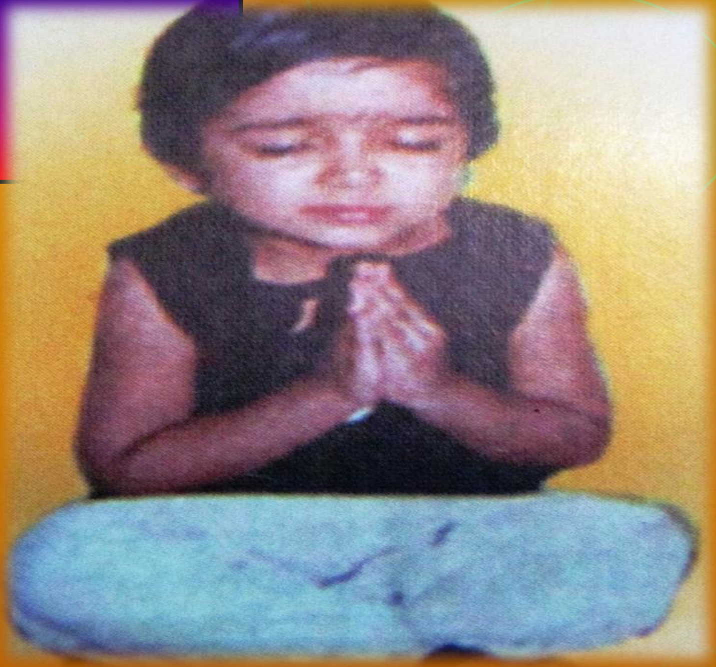

- मस्तक पर तिलक लगायें ।
- णमोकार मंत्र, चत्तारि मंगल पाठ बोलते हुये अष्टांग नमस्कार करें ।
- गन्धोदक अपने मस्तक पर लगायें ।
- इसके बाद चित्त को एकाग्र कर भगवान की स्तुति बोलते हुए तीन प्रदक्षिणा दें ।
- फिर 9 बार णमोकार मंत्र बोलते हुए कायोत्सर्ग करें ।
- उसके बाद आधा घंटा स्वाध्याय करें

निःसहि का अर्थ

सर्व सांसारिक
कार्यों का निषेध
(त्याग करता हूँ)

मन्दिरजी में घण्टा क्यों बजायें?

यह मंगल ध्वनि का प्रतीक है

इससे हमारा मानसिक प्रदूषण दूर हो जाता है

तिलक क्यों लगाना चाहिये?

यह आस्तिकता का प्रतीक है

नमोस्तु का अर्थ

आपको नमस्कार हो

गंधोदक लगाते समय क्या बोलें?

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनं।
जिनगन्धोदकं वन्दे, अष्टकर्म विनाशनं॥

अष्टांग नमस्कार

- मस्तक
- दो हाथ
- दो पैर
- हृदय
- पीठ
- नितम्ब

गवासन मुद्रा

- गवासन मुद्रा में नमस्कार कौन करता है?

- मुनि महाराज
- श्राविका
- महिलायें

तीन प्रदक्षिणा क्यों देना चाहिये

- रत्नत्रय की प्राप्ति के लिये
- भगवान को सर्व ओर से निहारने के लिये
- मन वचन काय से नमस्कार के लिये
- कृत कारित अनुमोदना से नमस्कार के लिये
- समरम्भ समारम्भ आरम्भ के त्याग के लिये
- बहुमान / विनय का प्रतीक है क्योंकि तीन बहुवचन है ।

किस प्रकार से मन्दिर नहीं जाना

- खाली हाथ नहीं जाना
- झुठे मुंह नहीं जाना
- अपवित्र वस्त्र पहन कर नहीं जाना
- चमड़े से बनी चीजें लेकर नहीं जाना
- काले कपड़े पहन कर नहीं जाना
- मैले, फटै हुये वस्त्र पहन कर नहीं जाना
- बनाव श्रंगार करके सजधज कर नहीं जाना

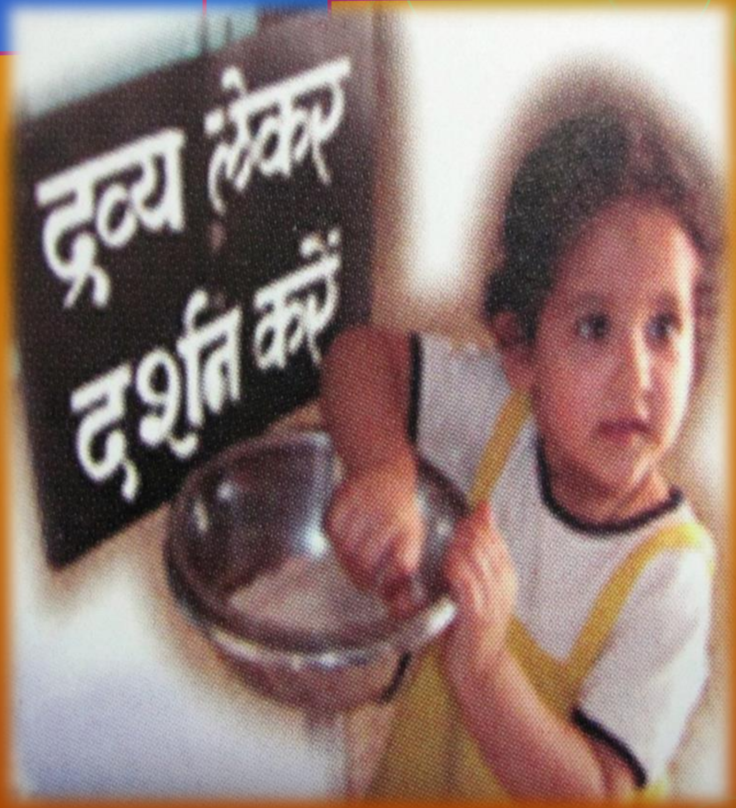

दर्शन के समय क्या नहीं करना?

- इधर-उधर नहीं देखते रहना
- ‘दूसरे लोग क्या कर रहे है’ – इसकी तरफ ध्यान नहीं देना
- ’कौन मुझे देख रहा है’ ऐसा नहीं देखते रहना
- बातें - गप्पे नहीं लगाना
- खाना - पीना नहीं करना
- दौड़ना, खेलना, कूदना नहीं
- शोर नहीं करना

देव दर्शन कब करना? कितनी बार करना?

आप खाना कब खाते है ?

- प्रतिदिन (Daily)

कितनी बार खाते है ?

  - Morning
  - Evening

अत: हमें मन्दिर भी प्रतिदिन भोजन के पूर्व प्रात:काल और भोजन के बाद सांयकाल जाना चाहिये

Note :

- कोइ २ बार नहीं जा सके, तो एक बार तो अवश्य ही जाये ।
- कोइ सुबह या शाम को नहीं जा सकें, तो दिन में या जब समय मिल जाये, तभी दर्शन कर लें।

दर्शन कितनी देर तक करना?

- 1 minute ?
- 5 minutes ?
- 30 minutes ?
- जब तक भूख नहीं लगने लगे ?
- जब तक इच्छा हो ?

दर्शन करने से लाभ

1. साक्षात भगवान की याद आती है ।
2. उन्हीं जैसे बनने की भावना जाग्रत होती है ।
3. एक उपवास का फल लगता है।
4. आत्मा में शान्ति प्रगट होती है।
5. स्वयं को प्रसन्नता होती है ।
6. अपने पराये का भेद विज्ञान होता है ।
7. हिंसादि पाप नष्ट हो जाते हैं ।
8. कषायों में मन्दता आती है ।

गलत विधि से करने पर हानि

सारे लाभ नहीं मिलते

अल्प ही पुण्य-बंध होता है |

जिन दर्शन से निज दर्शन

- प्रथम अर्हन्त भगवान की प्रतिमा के दर्शन करना

- प्रतिमा के साथ विराजमान अर्हन्त प्रभु की आत्मा के दर्शन करना

- जैसे अर्हन्त की आत्मा है, वैसे ही स्वयं की आत्मा को देखना

- Presentation created by : Smt. Sarika Vikas Chhabra
- For updates / comments / feedback / suggestions, please contact

- sarikam.j@gmail.com
- ☎: 94066-82889